भजन

तर्ज–हमें और जीने की चाहत

हमें धाम चलने की चाहत न होती,
अगर न बताते अगर तुम न आते

1– तुम्हें भूल कर तो लगता था ऐसे,
गमों के ही दरिया में आये हों जैसे
दिखाई न देती अन्धेरों में कश्ती,
अगर न दिखाते अगर तुम न आते
2– पिया जी तुम्हारा जो सहारा न मिलता,
भंवर में ही रहते किनारा न मिलता
किनारे पे लाके ये माया डुबोती,
अगर न बचाते अगर तुम न आते
3– हमें अब पता है कि तुम मेरे क्या हो,
अपनी रूहो के तुम्हीं शहनशाह हो
मेरे रूबरू ये चिलमन ही होती,
अगर न हटाते अगर तुम न आते
4– बख्शी खता फिर भी लेने को आए,
जहां में न ऐसा कोई ढूंढ पाए
मैं आशा की लड़ियां रह रह पिरोती,
अगर तुम न आते गले न लगाते